International Journal of Humanities and Social Science Invention
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org Volume 2 Issue 4 ǁ April. 2013ǁ PP.61-66

"वैश्विक समस्या के रूप में आतंकवाद: विश्लेषणात्मक अध्ययन "

डॉ0 जितेन्द्र बहादुर सिंह
एसो0 प्रो0 – राजनीति विज्ञान
पं0 राम लखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
आलापुर, अम्बेडकरनगर, उ0प्र0

शोध सारांश

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में कौटिल्य के अर्थशास्त्र की खोज ने इस धारणा का पूर्णता खंडन कर दिया कि भारत का प्राचीन काल राजनीतिक चिंतन की दृष्टि से मरूभूमि है और प्राचीन काल में विश्व को केवल अध्यात्म दर्शन ही दिया है कौटिल्य के अर्थशास्त्र के प्रकाश में आने के बाद पश्चात् विचारकों का यह भ्रम दूर हो गया और वे यह मानने लगे कि प्लेटो और अरस्तू एवं अन्य यूनानी विचारों के पूर्व भी भारत में समाज और राज दर्शन पर मौलिक ग्रंथों की रचना की जाती रही है।

प्राचीन भारतीय राज्य शास्त्रीय में कौटिल्य का स्थान सबसे ऊंचा है और उसे शासन कला और कूटनीति का महान प्रतिपादक माना जाता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र का मुख्य प्रतिपादक विषय राजनीति है। सलेटोर ने अर्थशास्त्र को महत्वपूर्ण रचना माना है क्योंकि अपने पूर्व सभी राजनीतिक विचारों का सार प्रस्तुत करता है। कौटिल्य ने विदेश राज्य संबंधों को संचालित करने के लिय दो सिद्धान्तों को दिया मंडल सिद्धांत और षड्गुणनीति। और इन को संचालित करने के लिए चार उपाय – साम, दाम, दंड और भेद सुझाए। उन्होंने आंतरिक और बाह्य दोनों स्तरो के लिए राज्य के लिए एक सुदृढ़ गुप्तचर व्यवस्था की बात की है जिमें–कापटीक, उदास्थित, गृहपातक, तापस, बैदेहक, मंत्री, तीक्ष्ण, रसद, तथा भिक्षुकी हैं।

आज भारत एक केंद्रीकृत शासन व्यवस्था को जी रहा है तो उसकी नीव कहीं ना कहीं कौटिल्य के दर्शन में मिलती है। कौटिल्य भारतीय दर्शन को विश्व के पटल पर उजागर किया और यह दिखाया कि भारतीय दर्शन काफी समृद्ध और उच्च कोटि का है। उसने नियोजित और मिश्रित अर्थव्यवस्था, लोक कल्याणकारी एवं समाजसेवी राज्य, यथार्थवादी विचारक और शासन व्यवस्था के संचालन हेतु–सेना, युद्ध, दूत और राजस्व आदि विषयों पर विशेष रूप से विवेचन प्रस्तुत किया। धर्मनिरपेक्ष राज्य का प्रणेता माना जाता है क्योंकि उसने ही धर्म को राजनीतिक चिंतन से अलग किया और राजनीति को एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापित किया। कौटिल्य विदेश नीति के संचालन में जिन व्यवहारिक पक्षों पर ध्यान देता है वह आज भी मौलिक है और भारत आंशिक या कुछ हद तक उन नीतियों पर आज भी चलता है। भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों के संचालन में, अंतरराष्ट्रीय संगठनों जैसे–संयुक्त राष्ट्र संघ, डब्ल्यूएचओ, सार्क, आसियान, यूरोपीय यूनियन आदि के साथ संबंधों का नियमन में कौटिल्य की बताएं नीतियों का अनुसरण करता है। कौटिल्य के दर्शन का सार शांतिपूर्ण सह अस्तित्व और विजिगीषु राजा दोनों है तो भारत उन्हीं नीतियों पर चलता है।

"शोध पत्र"

प्रस्तावना : कौटिल्य एक ऐसा राजनीतिक विचारक था जिसने न केवल राज्य के आंतरिक प्रशासन के सिद्धांतों का वर्णन किया है वरन उसने उन सिद्धांतों का भी उल्लेख किया है, जिसके आधार पर एक राज्य द्वारा दूसरे राज्यों के साथ अपने संबंध निर्धारित करते हैं। अर्थशास्त्र में उसने विदेश नीति का विषद विवेचन किया है। दूसरे राज्यों के साथ व्यवहार के संबंध में उसने दो सिद्धांतों का विवेचन किया है। पड़ोसी राज्यों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए मण्डल सिद्धांत और अन्य राज्यों के साथ व्यवहार निश्चित करने के लिए छः लक्षणों वाली षड्गुणनीति का विवेचन किया है।

मण्डल सिद्धांत : कौटिल्य ने अपने अन्तर्राज्यीय संबंधों का निर्धारण "मण्डल सिद्धांत" के आधार पर किा है। यह मंडल सिद्धांत बारह राज्यों का एक समूह है जिसका केंन्द्र "विजिगीषु" राजा है। विजय की इच्छा रखने वाले राजा

को कौटिल्य ने विजीगीषु कहा है। इस मण्डल सिद्धांत में राज्यों के पारस्परिक संबंधों के आधार कौटिल्य इन्हें निम्नलिखित नामों से पुकारा है –

1. विजीगीषु : अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार करने का आकांक्षी राज्य विजीगीषु कहलाता है यह मण्डल का केंद्र है।

2. अरि : विजीगीषु की सीमा से लगा हुआ राज्य शत्रु राज्य है।

3. मित्र : अरि राज्य के सामने वाला राज्य मित्र राज्य होता है।

4. अरि मित्र : मित्र के आगे वाला राज्य अरि मित्र राज्य होता है।

5. मित्र–मित्र : अरि–मित्र के सामने वाला राज्य मित्र–मित्र राज्य है, क्योंकि यह मित्र राज्य का मित्र है।

6. अरिमित्र– मित्र : अरिमित्र–मित्र राज्य अरिमित्र राज्य का मित्र होता है। यह विजीगीषु का शत्रु होता है।

7. पार्ष्णिग्राहसार : विजीगीषु के पिछे पार्ष्णिग्राहसार राज्य होता है, यह पिछे का शत्रु राज्य है।

8. आक्रांद : पार्ष्णिग्राहासार के पीछे का राज्य आक्रांद राज्य है। इसे पीठ पीछे का मित्र है।

9. पार्ष्णिग्राहसार : पार्ष्णिग्राहसार राज्य पार्ष्णिग्राह का मित्र राज्य होता है। आक्रांद के पीछे होता है विजीगीषु का शत्रु होता है।

10. आक्रांदासार : पार्ष्णिग्राहसार के पीछे स्थित राज्य आक्रांदासार राज्य कहलाता है। यह राज्य आक्रांद का मित्र होने के कारण विजीगिषु का मित्र होता है।

11. मध्यम : मध्यम राज्य ऐसा राज्य होात है, जिसकी सीमाएं विजीगिषु और अरि दोनों राज्यों की सीमाओं से लगे होते हैं। मध्यम राज्य दोनों राज्यों से अधिक शक्तिशाली होता है। जो दोनों की आवश्यकता पड़ने पर मदद् और आवश्यकता पड़ने पर अलग–अलग मुकाबला कर सकता है।

12. उदासीन : उदासीन राज्य का प्रदेश विजीगिषु, अरि एवं मध्यराज्य की सीमाओं से पृथक होता है। यह बहुत अधिक शक्तिशाली होता है। जो आवश्यकता पड़ने पर तीनों की मदद और अलग–अलग होने की दशा में प्रत्येक का मुकाबला कर सकता है।

कौटिल्य ने बारह राज्यों को चार मंडलों में बाटा है –

प्रथम मंडल – इसमें स्वयं विजिगीषु, उसका मित्र उसके मित्र का मित्र शामिल है।

द्वितीय मंडल – इस मंडल विजिगीषु का शत्रु शामिल होता है, साथ ही विजिगीषु के शत्रु का मित्र और शत्रु के मित्र का मित्र सम्मिलित किया जाता है।

तृतीय मण्डल – इस मण्डल में मध्यम, उसका मित्र एवं उसके मित्र का मित्र शामिल किया जाता है।

चतुर्थ मण्डल – इस मण्डल में उदासीन, उसका मित्र और उसके मित्र का मित्र शामिल किया जाता है।

मण्डल सिद्धांत के आधार पर कौटिल्य ने इस बात की ओर निर्देशित किया है कि कौन से राज्य मित्र हो सकते हैं और कौन से राज्य शत्रु। अतः राजा को अपनी नीतियों का निर्धारण इन तथ्यों को ध्यान में रखकर करना चाहिए या बनानी चाहिए। जो राज्य नीति निर्माण में इन सिद्धांतों का पालन करता है वह सदैव सफल रहता है ऐसा कौटिल्य का मानना है। कौटिल्य ने विस्तार पूर्वक मण्डल सिद्धांत के इन बारह राज्यों के प्रकृतियों के बारे में विस्तार पूर्वक वर्णन किया है और इनके संबंधों को निर्धारण के लिए ही षड्गुणनीति और चार उपायों का विवेचन किया है जिनके आधार पर राष्ट्र संबंधों का निर्धारण करने में सफलता मिलेगी।

राज्य मण्डल–मॉडल

<table>
<tr><td colspan="2">10– आक्रंदासार (आक्रंद का मित्र)</td></tr>
<tr><td colspan="2">9– पार्ष्णिग्राहासार (पृष्ठ के शत्रु मित्र)</td></tr>
<tr><td colspan="2">8–आक्रंद (पृष्ठ का मित्र)</td></tr>
<tr><td colspan="2">7–पार्ष्णिग्राह (पृष्ठ का शत्रु)</td></tr>
<tr><td>1–विजागीषु</td><td rowspan="2">11–मध्यम</td></tr>
<tr><td>2–अरि</td></tr>
<tr><td colspan="2">3–मित्र</td></tr>
<tr><td colspan="2">4–अरिमित्र</td></tr>
<tr><td>5–मित्र–मित्र</td><td rowspan="2">12 – उदासीन</td></tr>
<tr><td>6–अरिमित्र–मित्र</td></tr>
</table>

मूल्याकंन :– कौटिल्य का मण्डल सिद्धातं उस युग की परिस्थितियों के अपेक्षा वर्तमान परिस्थितियों में आंशिक रूप से प्रासंगिक है। क्योंकि यदि कौटिल्य के मण्डल सिद्धांत के अनुसार यदि सभी राज्य अनुसरण करना शुरू कर दे ंतो विश्व

पूरा युद्ध क्षेत्र बन जाएगा। चारों तरफ वैमनस्य आशांति का वातावरण होगा। शांति और सहयोग के मायने अप्रासांगिक हो जाएंगे। राज्यों के मध्य संबंधों का आधार मात्र शक्ति विस्तार होगा। अन्य संबंध गौण हो जाएंगे।

लेकिन दूसरी स्तर पर देखा जाए तो कौटिल्य का मण्डल सिद्धांत शक्ति की महत्ता को दर्शाता हे। यदि आप शक्तिशाली होंगे तो आपकी सुरक्षा पर कोई आंच नहीं आएगी। कोई भी आपसे नाराज नहीं चलेगा। विश्व में आपकी बात सुनी जाएगी। वही यह सिद्धांत बताता है कि विश्व शांति के लिए शक्ति संतुलन आवश्यक है। राष्ट्रों का एक ऐसा समूह होने चाहिए जो शक्ति के दृष्टि से एक दूसरे के समान हो। तीसरी बात यह है कि एक राष्ट्र की सीमा पर स्थित अन्य राष्ट्र अधिकतर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसके प्रति शत्रु भाव रखते हैं। जैसे भारत के पड़ोसी चीन और पाकिस्तान भारत से बैर भाव रखते हैं। इस प्रकार कौटिल्य का यह सिद्धांत वर्तमान में भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक ज्यादा प्रतीत होता है।

शड्गुणनीति : कौटिल्य ने विदेश नीति का निर्धारण करने के लिए जिस सिद्धांत का प्रतिपादन किया है उसे षड्गुणनीति कहते हैं। उसके अनुसार एक राज्य को अपनी विदेश नीति का निर्धारण छः प्रमुख सिद्धांतों के आधार पर करना चाहिए। षड्गुणनीति को परिभाषित करते हुए कौटिल्य ने कहा है कि –"दो राजाओं का कुछ शर्तों पर मेल हो जाना सन्धि, शत्रु का अपकार करना, विग्रह, आक्रमण करना यान, उपेक्षा करना आसन, आत्मसमर्पण करना संश्रय और सन्धि–विग्रह दोनों से काम लेना द्वैधीभाव कहलाता है।" कौटिल्य की षड्गुणनीतियां निम्नलिखित हैं –

1. **सन्धि** – कौटिल्य के अनुसार किसी भी राज्य के लिए सन्धि की नीति का उद्देश्य अपने शत्रु की शक्ति को नष्ट करना तथा स्वयं को भी बलशाली बनाना होता है। एक शत्रु राज्य पर विजय ना प्राप्त कर पाने की स्थिति में संधि कर लेनी चाहिए। क्योंकि स्वयं को शत्रु के समक्ष बलशाली बनाने के लिए कुछ समय प्राप्त करना चाहिए।
2. **विग्रह** – विग्रह का अर्थ है युद्ध। यह विजिगिषु राजा द्वारा निर्वल राजा के विरूद्ध प्रयुक्त किए जाते हैं। कौटिल्य कहता है कि युद्ध तभी करना चाहिए जब राजा शत्रु के विरूद्ध अपनी शक्ति के बारे में पूर्णतया आवश्स्त हो। युद्ध और सन्धि दोनों से समान लाभ प्राप्त होने की स्थिति में राजा को सन्धि का अनुसरण करना चाहिए। कौटिल्य के अनुसार युद्ध को अंतिम विकल्प के रूप में प्रयोग करना चाहिए। युद्ध करने से पूर्व राजा को अपने मण्डल मित्रों से आवश्यक परामर्श कर लेना चाहिए। यह वास्तविक युद्ध नहीं है।
3. **यान** – यान का अभिप्राय वास्तविक आक्रमण है। इस नीति को तभी अपनाना चाहिए जब राजा अपनी स्थिति को सुदृढ़ रखें और ऐसा प्रतीत हो कि आक्रमण के मार्ग के बिना शत्रु को बस में करना संभव नहीं है।
4. **आसन** – जब बिजीगीषु और शत्रु समान रूप से शक्तिशाली हो तो राजा के द्वारा आसन अर्थात तटस्थता की नीति अपनानी चाहिए। इस काल में उसे निरंतर अपनी शक्ति में वृद्धि करने की चेष्टा करते रहना चाहिए।
5. **संश्रय** – संश्रय का अर्थ है शरण लेना। यदि कोई राजा शत्रु को हानि पहुंचाने की क्षमता नहीं रखता और ना ही अपनी रक्षा अपने में समर्थ होता है, तो ऐसी स्थिति में उसे किसी बलवान राज्य की शरण लेनी चाहिए। यदि बलवान राजा ना मिले तो सबल शत्रु की ही शरण ले लेनी चाहिए।
6. **द्वैधीभाव** – एक राजा से संधि और दूसरे से विग्रह या युद्ध के नीति का अनुसरण करने के स्थिति को द्वेधीभाव कहा जाता है।

कौटिल्य की विचारधारा का मूल्य उद्देश्य है कि विशेष परिस्थितियों अनुसार जो नीति उपयुक्त हो, वही अपनाई जानी चाहिए। नीतियों के क्रियान्वयन मे लाभ–हानि का आकलन कर लेना चाहिए। इन नीतियों के सफल संचालन के लिए कौटिल्य ने भारतीय आचार्यों की तरह–साम, दाम, दण्ड भेद चार उपायों का विधान किया है। साम का अर्थ है निर्बल राजा को समझा–बुझाकर, दाम का अर्थ है कुछ दान या सहायता कर, दण्ड का अर्थ है युद्ध या युद्ध का भय दिखाकर और अंत में भेद का अर्थ है फूट डालकर उन्हें अपने बस में कर लेना चाहिए। सबल शत्रु राजा के प्रति भेद नीति अपनानी चाहिए। क्योंकि उससे विजय प्राप्त करना असंभव है। उसके संबंधित मित्र राज्यों या उसके अमात्य और मंत्रियों में भेद उत्पन्न करना चाहिए, ताकि सबल शत्रु निर्बल हो जाए। कौटिल्य के अनुसार दण्ड उपाय का प्रयोग तभी किया जाना चाहिए जब तीनों उपाय– साम, दाम, भेद असफल हो जाएं।

भारतीय विदेश नीति के समक्ष चुनौतियां : गत वर्ष भारत में नई सरकार के पदार्पण के साथ ही भारतीय विदेश नीति के सन्दर्भ में कई तरह के कयास लगने लगे, प्रश्न उठने लगे कि क्या भारतीय विदेश नीति में कुछ विशेष परिवर्तन किया जाएगा जो विदेश नीति का नया मानदंड या पर्याय बन जाएगा ? एन डी ए सरकार के समक्ष मुख्य चुनौतियां या होंगी ? उन चुनौतियों का सामना करने का सरकार का तरीका क्या होगा ? इन प्रश्नों के साथ यह अनुमान भी लगाया जाने लगा कि विगत वर्षों में, विदेश नीति में जो एक ठहराव आ गया था, कम से कम उसमें कुछ गति आएगी, प्रधान मंत्री नरेंन्द्र मोदी ने निश्चित रूप से एक बेहतरीन शुरूआत करते हुए विश्व पटल पर भारत की छवि को मजबूत किया

है। हालाँकि पड़ोस की भू–राजनीतिक वास्तविकताओं और अंतराष्ट्रीय स्तर पर विश्व ताकतों की नीतियों के मददेनजर एन डी ए सरकार की शुरूआती सफलता से बँधी उम्मीदों को बनाए रखना वर्ष 2015 की मुख्य चुनौती होगी।

पिछले कुछ वर्षों में विश्व पटल पर होने वाली घटनाओं पर अगर ध्यान डाला जाए तो मुख्य चुनौतियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं, दक्षिण एशिया, विशेषकर पाकिस्तान और अफगानिस्तान, इस वर्ष भारतीय विदेश नीति के लिए सबसे बड़ी चुनौती है, सरकार ने 'नेबरहुड फर्स्ट' की नीति अपनाते हुए दक्षिण एशिया में एक अच्छी शुरूआत तो की, परन्तु अपनी इच्छा को ठोस परिणामों में परिवर्तित न कर सकी, पड़ोसी देशों के सन्दर्भ में सबसे महत्वपूर्ण कदम बांग्लादेश के साथ 'सीमा समझौता' है, किन्तु दूसरा महत्वपूर्ण मुददा 'तीस्ता रिवर वॉटर' पर अभी तक कोई राय नही बन पाई है, चीनी पनडुब्बी के कोलंबो दौरे से जहाँ भारत और श्रीलंका के रिश्तों में खटास आ गयी थी, वहीं नई सरकार मैत्रीपाला सीरीसेना के आगमन से दोनों देशों के बीच संबंधों में सुधार के अवसर बन गये हैं, यह देखना रोचक होगा कि यह सरकार कैसे इस रिश्ते को आगे ले जाती है, भारत–पाकिस्तान के साथ संबंधों में आए ठहराव के बाद नई दिल्ली को, चीन तथा अन्य बाहरी ताकतों के प्रभाव को संतुलित करते हुए, इस्लामाबाद के साथ सकारात्मक घटनाक्रम पर सावधानी से चलना होगा, वर्तमान परिस्थिति में पाकिस्तान के साथ उसके संबंध अफगानिस्तान पर भी प्रभाव डालेंगे, अफगानिस्तान से नाटो शक्तियों की वापसी के बाद क्षेत्रीय ताकतों ने अपना प्रभाव जमाने की कवायद शुरू कर दी है, अफगानिस्तान में अपनी पैठ प्रभावी ढंग से बनाए रखना नई सरकार के लिए एक बड़ी चुनौती होगी। दक्षिण एशिया में आतंकवाद का मुकाबला करना भी सरकार की प्राथमिकताओं में से एक होगा।

पश्चिम एशिया में होने वाली राजनीतिक उथल पुथल, धार्मिक कटट्रवाद और आतंकवाद की घटनाओं ने विश्व स्तर पर विषम परिस्थितियॉ पैदा कर दी हैं, दक्षिण एशिया में जिस तरह से इस्लामिक राज्य की घोषणा हुई है और जिस तरह विभिन्न देशों के युवा इस संगठन से जुड़ रहे हैं, यह एक चिंत का विषय है, पश्चिम एशिया में तेल से होने वाली आय से इस्लामिक राज्य को समर्थन मिलने की संभावना है जिससे धार्मिक कटट्रवाद को बढ़ावा मिलेगा, यह देखना स्वाभाविक होगा कि लीबिया, येमन, सिरीया और इराक जैसे राष्ट्र जो विषम परिस्थितियों से गुजर हैं, उनका भविषय क्या होगा, इस्त्राइल और फिलिस्तीन जैसे मुद्दों को एक साथ कैसे संबोधित किया जाए, इस परिपेक्ष्य में भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि तेल का आयात बिना बाधित हुए भारत पश्चिम एशिया की समस्याओं पर क्या रूख ले सकता है, साथ ही यह भी देखना होगा कि वहॉ काम कर रहे भारतीय नागरिकों को कोई नुकसान न हो, एन डी ए सरकार को इस बात का ख्याल रखना होगा कि भारतीय संसाधनों के आतंकवादी संगठन द्वारा इस्तेमाल पर कैसे रोक लगाई जाए ताकि ऐसे आतंकवादी संगठन भारत के खिलाफ लामबंद ना हो पाएं।

भारतीय विदेश नीति के समक्ष एक महत्वपूर्ण चुनौती है चीन के साथ अपने संबंधों की दिशा निर्धारित करना, चीन की प्रसारवादी नीति और आक्रामक रवैये से विश्व स्तर पर असहजता बढ़ी है, चीन, पूर्वी चीन सागर और दक्षिणी चीन सागर के पूरी तरह से अपने प्रभाव का क्षेत्र मानता है, चीन अपने सामरिक और राष्ट्रीय हितों के लिए जो आक्रामक रवैया अपना रहा है, उसने जापान और विएतनाम जैसे देशो में असुरक्षा की भावना को जन्म दिया है, इन्हीं वजहों से अमेरिका को विएतनाम और जापाान जैसे देशों के साथ संबंध स्थापित करने में आसानी हो गयी है, जापान ने अपनी शांति समर्थन करने वाले संविधान में परिवर्तन कर, खुद को चीन की चुनौती के लिए तैयार करने की ठान ली है, भारत–चीन की सीमा पर चीन के आक्रामक रवैये से भारत में भी असहजता और चिंता की स्थिति है, हालॉकि गौरतलब है कि चीन भारत जैसे बाजार को नजरअंदाज नहीं कर सकता है, भारत को यह निर्धारित करना है कि वो चीन के साथ सहयोग की नीति अपनाना चाहता है या अमेरिका के 'चीन की चुनौती' रोकने के अभियान में शामिल होना चाहता है। इसी संबंध में जब चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारत आए थे, तो प्राधान मंत्री नरेंन्द्र मोदी ने अपनी चिंताओं से चीनी राष्ट्रपति को अवगत कराया था, उन्होंने ये भी कहा था कि भारत चीन के संबंध में संभावनाये तो बहुत हैं, मगर चुनौतियॉ भी उतनी ही हैं, संभवनायें व्यक्त की जा रहीं हैं कि प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी चीन की यात्रा कर सकते हैं, इस सन्दर्भ में चीन और अमेरिका के साथ संबंधों का निर्धारण भारतीय विदेश नीति के लिए एक बड़ी चुनौती होगी।

रूस और अमेरिका के साथ संबंधों में संतुलन बनाए रखना भी भारतीय विदेश नीति के लिए एक मुख्य मुद्दा होगा, अमेरिक ने भारत के 'रणनीतिक साझेदार' के रूप में पिछले दो वर्षों से, सबसे बड़े हथियार आपूर्तिकर्ता के रूप में रूस की जगह ले ली है, शीत युद्ध के बाद राष्ट्रीय हितों को पुनः परिभाषित करना, इसकी मुख्य वजह रही है रूस और अमेरिका में 'युक्रेनिअन संकट' को लेकर जो सामयिक गतिरोध पैदा हुआ है उससे भारत के ऊपर भी दबाव बढ़ा है, 26 जनवरी 2015 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर, मुख्य अतिथि के रूप में, अमेरिका राष्ट्रपति बराक ओबामा की भारत यात्रा कई मायनों महत्वपूर्ण है, इस यात्रा से भारत और अमेरिकी संबंधों में एक नया दौर आया और 'आण्विक समझौते' में गतिरोध खत्म होने के आसार नजर आने लगे साथ ही रक्षा सहयोग, विशेषकर रक्षा उत्पादन और रक्षा उपकरण के आयात को सुगम बनाने की कोशिश की गयी। व्यापार और पेटेंट जैसे मुद्दों पर भी सकारात्मक बहस हुई। दूसरी ओर भारतीय और रूसी नेताओं मुलाकात, विशेषकर रूसी राष्ट्रपति पुतिन के भारत दौरे के समय, रूस को ये आश्वासन दिया

गया की रूस आगे भी भारत का हथियार आपूर्तिकर्ता बना रहेगा, वर्तमान समय में इन दोनों देशों के बीच पुनः शीत युद्ध की स्थिति बनने से भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि वह क्या रूख अपनाता है और इन दोनों देशों के साथ भारत के संबंध कौन सी दिशा लेते हैं ? यूरोपीय देशों के साथ भारत के संबंधों को और कितनी गहराई तक ले जा सकता है, यह भी विदेश नीति का एक मुख्य पहलु होगा, यूरोपीय देश भारतीय बाजार की ओर आकर्षित हैं, परन्तु मुक्ति व्यापार क्षेत्र' के संबंध में जो वार्ता हो रही है वो किसी निश्चित दिशा की ओर नहीं जा रही है, भारत और यूरोपीय देशों के बीच मुक्त व्यापार नई संभावनाओं को जन्म देगा।

यह माना जाता है कि भारत की विकास की गति, उसकी आर्थिक नीति व सामरिक सोच के कारण, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की अवहेलना नहीं की जा सकती, इसके साथ ही आर्थिक क्षेत्र में नई संभावनाओं को तलाशना और निर्यात को बढ़ावा देना भी विदेश नीति का महत्वपूर्ण कदम, होगा भारत को इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा कि विदेशों में अपने संसाधनों को और वृहत कैसे बनाया जाए, क्षेत्रीय सहयोग संगठनों जैसे दक्षेस और आसियान में भारत को अपनी भूमिका और सशक्त बनानी होगी और सबके साथ शांति और सहयोग के साथ आगे बढ़ने का संदेश देना होगा।

भारतीय विदेश नीति में कौटिल्य के सिद्धान्त का उपयोगिता :– डॉ0 बी0पी0 दत्त के अनुसार – "ऐतिहासिक परंपरा, भौगोलिक स्थिति और भूतकालीन अनुभव भारतीय विदेश नीति के निर्माण में प्रभावक तत्व रहें हैं।" यह भी सत्य है कि भारत की स्वतंत्रता पूर्व कोई विदेश नीति नहीं थी। इसकी नींव पंडित जवाहरलाल नेहरू ने डाली। भारत का सांस्कृतिक गौरव महत्वपूर्ण रहा है। यह है ना केवल पड़ोसी देशों के साथ अपितु दूर दूर स्थित देशों के साथ अपने सांस्कृतिक एवं व्यापारिक संबंधों का आदान प्रदान करता रहा है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने विदेश नीति के तीन आधारस्तंभ बनाएं–शांति, मित्रता और समानतां। भारत की विदेश नीति के निर्माण में जिन प्रभावित तत्वों का योगदान रहा उनमें–भौगोलिक तत्व, गुट बंदियॉ, विचारधाराओं का प्रभाव, आर्थिक चुनौती, सामरिक हित, राष्ट्रीय हित, ऐतिहासिक परंपरा और खुद हमारे राष्ट्रीय नेताओं के प्रभाव जो आंतरिक दबाव समूह और शक्तियों के आधार पर अपने नीति का निर्माण करते हैं।

के0एम0 पणिक्कर के अनुसार – " जब नीतियों का लक्ष्य प्रादेशिक सुरक्षा होता है तो उनका निर्धारण मुख्य रूप से भौगोलिक तत्व से हुआ करता है।" नेपोलियन बोनापार्ट ने भी इसी बात को कहा था कि –"किसी देश की विदेशनीति में उसके भूगोल द्वारा निर्धारित होती है।" भारत के विदेश नीति निर्धारण भारत का आकार, एशिया में उसकी विशेष स्थिति तथा भारत की सामुद्रिक और पर्वतीय सीमाओं ने विशेष रूप से प्रभावित किया। भारत इसलिए सोवियत संघ और पीओपी देशों, दोनों से लाभ लेने में सफल रहा। हमने विश्व शांति के लिए गुटनिरपेक्षता, संयुक्त राष्ट्र संघ, क्षेत्रीय संगठनों सब में बढ़चढ़ हिस्सा लिया। हमारी नीति शांतिपूर्ण सह अस्तित्व की रही है। इसके लिए हम पंचशील सिद्धांत को मान्यता देते थे। हमने प्रजातिय विभेद और साम्राज्यवाद का विरोध किया।

कौटिल्य ने अपने विदेश राज्य संबंधों को संचालित करने कि लिए जिस मण्डल सिद्धांत, षड्गुणनीति और चार उपायों साम, दण्ड, और भेद का उल्लेख जो किया है वह आज हमारे भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। आज हम अपने विदेश नीति अपने सीमा संबंधी विवादों पाकिस्तान और चीन के साथ इसी रूप में देख सकते हैं। इसी प्रकार भारत पाकिस्तान, अफगानिस्तान संबंध। भारत, चीन, रूस और जापान संबंध को इसी संन्दर्भ में देख सकते हैं। कौटिल्य ने अपने विदेश संबंधों को संचालित करने के लिए गुप्तचर व्यवस्था का वर्णन किया है जो आंतरिक और बाह्रा दोनों स्तरों पर काम करते हैं। यह गुप्तचर हैं – कापटीक, उदास्थित, गृहपातक, तापस, बैदेहक, मंत्री, तीक्ष्ण, रसद, तथा भिक्षुकी। कौटिल्य के यथार्थवादी विचारक था और उसने शासन व्यवस्था, सेना, युद्ध, दूत और राजस्व आदि विषयों की विवेचना की। कौटिल्य ने सिद्धांतों एवं व्यवहारिक कार्यों के आधार पर एक सुदृढ़ एवं केन्द्रीकृत शासन व्यवस्था भारत को प्रदान किया। नियोजित और मिश्रित अर्थव्यवस्था का व प्रेरक था। लोक कल्याणकारी एवं समाजसेवी राज्य की अवधारणा पर उसने बल दिया था। कौटिल्य ने राजनीतिक चिंतन को धर्म से अलग करते हुए राजनीति को स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापित किया। हम आज के अर्थों में कह सकते हैं धर्मनिरपेक्ष राज्य का प्रणेता।

राजनीतिक चिंतन को कौटिल्य की देन :– पश्चिम राजदर्शन के जनक अरस्तु समान कौटिल्य को भी भारतीय राजदर्शन का जनक कहा जाता है। सलेटोर ने इस संबंध में कहा है कि – "प्राचीन भारत की राजनीतिक विचारधारा में सबसे अधिक ध्यान देने योग्य कौटिल्य की विचारधारा है।" मैक्समूलर, ब्लूमफील्ड, डर्निंग इत्यादि पश्चात् लेखकों के अनुसार भारत वर्ष में राजनीतिक दर्शन की स्वतंत्र रूप से उत्पत्ति नहीं हुई। भारतीय चिंतन केवल धार्मिक और दार्शनिक सिद्धांतों का ही उच्चता प्राप्त कर सके हैं। पहली बार 1915 में जब अर्थशास्त्र का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुआ, तो भारतीय और पश्चात् क्षेत्र में हलचल मच गई। संक्षेप में राजनीतिक चिंतन के क्षेत्र में कौटिल्य के निम्नलिखित योगदान हैं। –

1. कौटिल्य ने राजनीतिक चिंतन को धर्म से अलग करते हुए राजनीति को स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापित किया। यह भारत की राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए जरूरी है।

2. कौटिल्य एक यथार्थवादी विचारक था और उसने शासन व्यवस्था, सेना, युद्ध, दूत और राजस्व आदि विषयों की विवेचना की जो 21वीं सदी में शक्ति संतुलन और विदेश नीति निर्धारण का मुख्य तत्व है।
3. कौटिल्य ने सिद्धांतों एवं व्यवहारिक कार्यों के आधार पर एक सुदृढ़ एवं केन्द्रीयकृत शासन भारत को प्रदान किया, जो आज मोदी सरकार के निर्णयों में देखा जा सकता है।
4. धर्मनिरपेक्ष राज्य का प्रणेता था। यह नीति हमारे अरब देशों के साथ संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए जरूरी है।
5. नियोजित एवं मिश्रित अर्थव्यवस्था का प्रेरक, जो आज के भारत के लिए सटीक बैठती है। लेकिन कुछ वर्षों से किसानों के हितों की उपेक्षा की जा रही है।
6. लोक कल्याणकारी एवं समाजसेवी राज्य की अवधारणा पर बल दिया है। भारत इन आदर्शों का पालन करते हुए तमाम योजनाओं को संचालित करता हे। चाहे वाह स्वास्थ्य, सड़क, सुरक्षा, पेयजल या कोविड–19 के दौर में राज्य अपनी नीतियों को लेकर सामने आया।

संक्षेप में राजनैतिक और कूटनीति संबंधी राणनीति के प्रति एक संहिताबद्ध दृष्टिकोण का उल्लेख कौटिल्य या चाणक्य के अर्थशास्त्र में मिलता है जो शासनकला पर पहला रचनात्मक ग्रंथ है। कौटिल्य का यह दृढ़म था। कि राष्ट्र अपने राजनैतिक, आर्थिक और सैन्य हित में ही काम करते हैं। कौटिल्य कें विचार में अवसरानुकूलता विदेश नीति का मुख्य आधार होता है।

–: संदर्भ ग्रंथ :–

1. **J. Bandopadhyay – 'The Making of India s Foreign Policy'- 2003 – Allied Publishers.**
2. **डॉ0 वेद प्रकाश वैदिक – 'भारतीय विदेश नीति–नये दिशा संकेत' - 1980, नई दिल्ली।**
3. **एस0 आर0 मल्होत्रा – 'नेहरू एण्ड द कॉमन वेल्थ'- 1975।**
4. **Mahendra Kumar – 'Theoretical Aspects of International Politics' (Hindi) ।**
5. **Joseph Frankel – National Interest, pp. 16-17.**
6. **Hans J Morganthou – POLITICS AMONG NATIONS.**
7. **आचार्य चाणक्य – 'कौटिल्य अर्थशास्त्र' – तुलसी साहित्य पब्लिकेशन, मेरठ।**
8. **डॉ0 परमात्मा शरण – 'प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएं', मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।**